शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता

प्राप्तिः 02.04.2022
स्वीकृतः 04.06.2022

34

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय, हापुड़
ईमेलः *poonambhardwajdr@gmail.com*

सारांश

विश्व मानव की बदलती जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिंदी भाषा में है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं। 'इकोनामिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया है कि 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल, जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिंदी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही, 'स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार–माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिणी पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है।

हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बडी सहजता से पाया जा सकता है। यूट्यूब पर भी सोशल मीडिया पर हिंदी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में 94 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्व मन के सुखःदुख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा विश्व में हिंदी भाषी करीब 70 करोड़ लोग हैं। यह तीसीर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। 1.12 अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है। चीनी भाषा बोलने वाले करीब 1.10 अरब के साथ दूसरे स्थान पर है। यूनेस्को के बहुत सारे कार्य हिंदी में सम्पन्न होते हैं। शैक्षिणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन हो रहा है। आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान–प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मानवता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। वह विश्व की सबसे शक्तिशालिनी और बहुप्रयुक्त भाषा है।

मुख्य बिंदु

हिंदी, भाषा, विश्व, रोजगार।

आज देश–विदेश हर स्तर पर हिंदी छाई हुई है। आज हिंदी में विश्व का महत्वपूर्ण साहित्य अनुसृजनात्मक लेखन के रूप में उपलब्ध है और उसके साहित्य का उत्तमांश भी विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से लिखा जा रहा है।[1] 80–90 के दशक के बाद जब तकनीकी क्रांति जोर पकड़ने लगी तो अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का भारत में आगमन हुआ। तकनीकी वस्तुओं का प्रचलन अधिक हुआ, कंप्यूटर–मोबाइल जैसे तकनीक उपकरणों आदि का वर्चस्व स्थापित हो गया। इन सब कार्यों में अंग्रेजी का भरपूर उपयोग होता था। तब ऐसा लगा कि अंग्रेजी छा जाएगी और हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि हिंदी का विस्तार हुआ। हिंदी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई।

मीडिया जगत में अनेक हिंदी समाचार चैनलों के आगमन से पत्रकारिता के क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएं बढ़ी। केवल समाचार चैनल ही नहीं, हिंदी भाषा में किसी न किसी विषय पर नित नये चैनल आते ही रहते हैं। इस कारण हिंदी में प्रस्तुति देने वालों का तथा हिंदी से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की इस क्षेत्र में निरंतर मांग में वृद्धि हो रही है।

गूगल ने भी हिंदी का महत्व समझते हुए हिंदी पर काफी कार्य किया है। उसने हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध है। माइक्रोसॉफ्ट कंप्यूटर के निर्माण के समय हिंदी को पूरा महत्व देता है और हिंदी फॉन्ट की उपलब्धता आज बेहद आसान हो गई है। हिंदी की अनेक वेबसाइटें है। जो हिंदी में पूण्र कंटेंट उपलब्ध करा रही हैं।

यूट्यूब पर भी हिंदी छाई हुई है। ऐसे अनेक चैनल है, जो हिंदी के कारण बेहद लोकप्रिय हैं। अंग्रेजी में अगर ऐसे चैनल होते तो वह इतने लोकप्रिय नहीं हो पाते। इसके अतिरिक्त अनेक ऑनलाइन शैक्षणिक वेबसाइटें बनी हैं, जिनमें हिंदी में अधिक से अधिक शिक्षण कार्य आरंभ कर दिया है ताकि उनकी पहुंच अधिक से अधिक लोगों तक जा सके। हिंदी में निरंतर रोजगार की संभावनाएं बढ़ती ही जा रही है और वह समय गया जब लोग कहते थे कि अंग्रेजी राजगार की भाषा है। अगर अंग्रेजी रोजगार की भाषा है तो हिंदी भी उससे कम नहीं और हिंदी में भी पर्याप्त रोजगार उपलब्ध हो रहे हैं। विश्व में हिंदी भाषी की संख्या करीब 70 करेड़ लोग हैं। यह तीसी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। 1.12 अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है। चीनी भाषा मेंडरिन बोलने वाले करीब 1.10 अरब के साथ दूसरे स्थान पर है। दूनिया में मौजुद भाषाओं की

जानकारी पर प्रकाशित होने वाले एथनोलॉग के 2017 के संस्करण में 28 ऐसी भाषाएँ शामिल हैं जिनमें से प्रत्येक के बोलने वाले पांच करोड़ से ज्यादा लोग हैं।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर की तर्ज पर हिंदी भाषी लोगों के लिए पुणे के अनुराग गौड़ और उनके साथियों ने मूषक नामक सोशल नेटवर्किंक साइट बनाई है। इसमें ट्विटर की 140 शब्दों की सीमा की अपेक्षा शब्द सीमा पांच सौ है। इसमें किसी भी हिंदी शब्द को रोमन में लिखने पर उसका हिंदी विकल्प नीचे आ जाता है। उसे चुनकर हिंदी में लिखा जा सकता है। हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अंतरराष्ट्रीय जगत छुपाए हुए है। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी, जापानी, सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अंतरराष्ट्रीय मैत्री और 'वसुधैव कुटुंबकम' वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।[2]

विश्व भाषा बनने के सभी गुण हिंदी में विद्यमान हैं।[3]

विदेश में 25 से अधिक पत्र–पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम एफ–एम' सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

हिंदी की विश्व में बड़ी धाक है। फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो एवं संयुक्त अरब अमीरात में हिंदी को बेहतर ढंग से जानने के लिए दुरिया के करीब 115 शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैंब्रिज और यॉर्क यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। कई संगठन हिंदी का प्रचार करते हैं। चीन में 1942 में हिंदी अध्ययन शुरू हुआ। 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ।

वर्तमान में हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसद तक बढ़ी है। हर पांच में से एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्स एप में हिंदी में लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिंदी इनपुट, लिपिक डॉट इन, जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। हिंदी–अंग्रेजी अनुवाद भी संभव है। हिंदी जिस गति तथा आंतरिक ऊर्जा के साथ अग्रसर है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि सन् 2030 तक वह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा बन जाएगी। आज विश्व का हर पांचवां व्यक्ति हिंदी बोलने अथवा समझने में सक्षम है। इस आधार पर हिंदी विश्वभाषा है। उसमें लिखित उपन्यास एवं समालोचना भी विश्वस्तरीय हैं। विश्व मानव की बदलती चिंतनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिंदी भाषा में है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठयक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह 'इकोनामिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया है कि 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिंदी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही, 'ई.एस.पी.एन' तथा 'स्टार स्पोर्टस' जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार–

माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूव एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ़ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं। यहां तक कि स्वयं गूगल का सर्वेक्षण सिद्ध कर रहा है कि विगत दो वर्षों में सोशल मीडिया पर हिंदी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में 94 प्रतिशत की बढोतरी हुई है। माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, यादू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। बीसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। हिंदी एशिया के व्यापारिक जगत् में धीरे–धीरे अपना स्वरूप बिम्बित कर भविष्य की अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है।[4] संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुखःदुख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

यूनेस्को के बहुत सारे कार्य हिंदी में सम्पन्न होते हैं। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन हो रहा है। आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान–प्रदानल व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। वह विश्व की सबसे शक्तिशाली और बहुप्रयुक्त भाषा होने के बावजू यह प्रतिष्ठा सहित संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा नहीं बन पाई है। इसके लिए हमें निरंतर प्रयास करना है।

इस प्रकार हिंदी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनना होगा। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमात निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। इसका विश्व स्तर पर बहुत तेजी से प्रसार हो रहा है।

संदर्भ

1. उपाध्याय, प्रो० करुणाशंकर. (2018). 'साहित्य संवाद'. अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका अप्रेल. ISSN: 23476796 विश्व में हिंदी का स्थान।
2. शर्मा, राकेश. विश्व भाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदम. 'निशीथ'–राजभाषा।
3. उपाध्याय, डॉ० करुणा शंकर. (2018). हिंदी का वैश्विक परिदृश्य. archived 11-19 at the Way back Machine.
4. विमल, गंगा प्रसाद. (2018). हिंदी की विश्वव्यक्ति. 1 मार्च।